अध्याय- 5

कर्त्तव्य बोध

'वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तव्य-मार्ग पर डट जाएँ।
पर-सेवा पर-उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जाएँ।'

हम प्रतिदिन ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना नहीं रह सकता। समाज का निर्माण तभी होता है, जब व्यक्ति, व्यक्ति में परस्पर सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार चलता रहता है। विभिन्न व्यक्तियों के संबंधों का निर्वहन तभी संभव हो पाता है, जब वे अपने कर्त्तव्यों का समुचित पालन करते हैं। जीवन में हर पल, हर क्षण, हर दिन हम अपने कर्त्तव्यों का ही निर्वहन करते हैं। कुछ कर्त्तव्य व्यक्तिगत होते हैं, कुछ पारिवारिक होते हैं, कुछ सामाजिक और कुछ राष्ट्रीय। सबका हित, सबका शुभ, सबका कल्याण कर्त्तव्य में महत्वपूर्ण होता है। जिस समाज के लोगों को अपने अधिकारों के साथ अपने कर्त्तव्यों का भी ज्ञान होता है, उस समाज में सर्वत्र सुख, शांति, प्रेम और भाईचारा व्याप्त रहता है। ऐसी समाज ही उन्नत माना जाता है।

प्रेरक प्रसंग

- श्रवण कुमार के पिता का नाम शांतनु तथा माता का नाम भाग्यवती था। उसके माता-पिता वृद्ध और नेत्रहीन थे। श्रवण कुमार उनका इकलौता पुत्र था। वह अपने माता-पिता की बड़ी सेवा करता था। वह उन्हें नहलाता, कपड़े बदलता और भोजन बनाकर खिलाता था। वह हर घड़ी उनकी सेवा में ही लगा रहता था। किसी संत ने उसे बताया कि यदि वह अपने माता-पिता को सारे तीर्थ कराकर उन तीर्थों का जल उनकी आँखों से लगाए तो उनकी आँखों की ज्योति वापस आ सकती है। श्रवण के सामने समस्या यह थी कि वह अपने नेत्रहीन माता-पिता को तीर्थयात्रा कैसे कराए? उस समय आजकल की तरह आवागमन की सुविधा तो थी नहीं। उसने एक बहँगी (काँवर) बनाई और एक-एक पलड़े में माता-पिता को बैठाकर तीर्थयात्रा को निकल पड़ा।

  तीर्थों का भ्रमण करते हुए अपने माता-पिता की आँखों की ज्योति वापस आने की कामना करता। पवित्र नदियों का जल उनकी आँखों में लगाता। जंगल, पहाड़, नदी, नाले पार करता हुआ, वह जहाँ रुकता, अपने माता-पिता को विश्राम कराकर ही सोता।

  अंत में वह अपने नगर वापस लौटते समय सरयू नदी के पास ठहरा। श्रवण के माता-पिता ने पानी की इच्छा प्रकट की। प्रात:काल का समय था। उसने नदी के पास ही अपनी काँवर टिकाई, और जल लेने के लिए

जलपात्र लेकर चल दिया। जैसे ही श्रवण ने जल लेने के लिए जलपात्र नदी में डुबोया, डब-डब की आवाज हुई। यह आवाज पास के जंगल में एक आखेटक ने सुनी, उसने किसी जानवर की आवाज समझकर अपना शब्दवेधी बाण चला दिया। वह आखेटक और कोई नहीं, अयोध्या के राजा दशरथ थे। वे शब्द या आहट सुनकर लक्ष्य भेदने में कुशल थे। वह बाण श्रवण कुमार को आकर लगा। श्रवण कुमार हाय कहता हुआ वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। जब राजा उस जगह पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके बाण से एक लड़का घायल होकर पड़ा है। वह कराह रहा था। चोट गहरी थी। यह देखकर राजा को बड़ा दु:ख हुआ। राजा ने अपने हाथ से उसके शरीर से तीर निकाला। आखेटक ने बालक से उसका परिचय पूछा। बालक इतना ही कह पाया कि वह एक ब्राह्मण कुमार है। पास ही उसके माता-पिता हैं। वे चक्षुहीन हैं। उन्हें प्यास लग रही है। कृपया उन्हें जल पिला दें। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इतना कहकर उसने प्राण त्याग दिए।

राजा दशरथ श्रवण के माता-पिता के पास जल लेकर गए, और उन्हें सारी घटना बताकर जल पीने का आग्रह किया।

राजा दशरथ की बात सुनकर माता-पिता पुत्र-मोह में व्याकुल हो गए। उन्होंने दु:खी मन से राजा को श्राप दे दिया कि जिस प्रकार हम पुत्र-वियोग में अपने प्राण त्याग रहे हैं, उसी प्रकार तुम भी पुत्र-वियोग में अपने प्राण त्यागोगे। राजा दशरथ ने उनसे क्षमा माँगते हुए कहा कि उनसे अनजाने में ही यह अपराध हुआ है। किंतु अब क्या हो सकता था? इस श्राप के कारण राजा दशरथ को पुत्र-वियोग में अपने प्राण त्यागना पड़े। धन्य है श्रवण कुमार और धन्य है उसकी मातृ-पितृ भक्ति। हमें भी अपने माता-पिता की इसी प्रकार सेवा करनी चाहिए।

- वकील साहब फौजदारी के मामले की अदालत में पैरवी कर रहे थे। मामला संगीन था। उनकी थोड़ी-सी असावधानी अभियुक्त को फाँसी दिला सकती थी। गंभीरतापूर्वक वे अपने तर्क दे रहे थे। तभी किसी ने वकील साहब के नाम का तार लाकर दिया। उन्होंने तार खोला, पढ़ा और मोड़कर जेब में रख लिया। वे उसी तन्मयता से बहस करते रहे।

  अदालत का समय समाप्त हुआ, वह उठ खड़े हुए। साथी वकीलों ने उनसे तार के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई, उसी की सूचना थी। साथियों ने कहा, इतनी बड़ी घटना घट गई और आप बहस करते रहे? उन्होंने उत्तर दिया-'और क्या करता? वह तो चली गई। क्या अभियुक्त को भी चला जाने देता?'

  कर्त्तव्य के प्रति इतना सजग और समर्पित वकील कोई और नहीं, सरदार वल्लभ भाई पटेल थे, जिन्हें लौह पुरुष और सरदार की उपाधि मिली थी।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'कर्त्तव्य' से आप क्या समझते हैं?
2. व्यावहारिक जीवन में 'कर्त्तव्य' का क्या महत्व है?
3. श्रवण कुमार अपने माता-पिता को तीर्थों का भ्रमण कराने क्यों ले गया?
4. श्रवण कुमार के माता-पिता ने राजा दशरथ को क्या श्राप दिया था?
5. सरदार पटेल जब फौजदारी के मामले में पैरवी कर रहे थे, तब पत्नी की मृत्यु का समाचार पाकर भी पैरवी क्यों करते रहे?
6. साथियों के पूछने पर कि इतनी बड़ी घटना घट गई, आप बहस करते रहे? इस पर साथियों को उन्होंने क्या उत्तर दिया?

प्रायोजना कार्य

1. कर्त्तव्य कितने प्रकार के होते हैं- सूची बनाइए।
2. छात्र-जीवन में आप किन-किन कर्त्तव्यों को महत्त्वपूर्ण समझते हैं, सूची बनाइए।
3. एक पड़ोसी के प्रति आपके क्या कर्त्तव्य हैं?
4. कर्त्तव्य निर्वाह करने वाले ऐसे बालकों की सूची बनाइए जिन्हें कर्त्तव्य निर्वाह करने पर वीरता पुरस्कार प्राप्त हुआ हो।